राजनीतिक जीवन में सफलता और दीर्घ प्रभाव के लिए □रिश्रम, प्रामाणिकता और □वित्रता आवश्यक है : लोक सभा अध्यक्ष

नई दिल्ली, 22 जून 2018 : लोक सभा स्□ीकर श्रीमती सुमित्रा महाजन ने आज कहा कि "राजनीतिक जीवन में सफलता और दीर्घ प्रभाव के लिए □रिश्रम, प्रामाणिकता और □वित्रता आवश्यक है। नई दिल्ली में विजन इण्डिया फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अन्तर्गत आईआईटी, एनएलयू, येल, एलएसई, मैनचेस्टर आदि संस्थानों से आए छात्रों और भूतपूर्व छात्रों से बातचीत करते हुए श्रीमती महाजन ने बताया कि स्□ीकर्स रिसर्च इनिशिएटिव (SRI) के माध्यम से सांसदों को विभिन्न मुद्दों □र कार्यशाला आयोजित कर महत्वपूर्ण जानकारिया□दी जा रही है ताकि वे संसद में कार्य-व्यवहार बेहतर तरीके, कुशलतापूर्वक स□ादित कर सकें।

स्□ीकर श्रीमती सुमित्रा महाजन ने नेहरू स्मारक भवन में आयोजित गरिमामय कार्यक्रम में स्टूडेंट्स को सम्बोधित करते हुए, अ□ने निर्वाचन क्षेत्र इंदौर के प्रतिनिधि के रू□ में अ□नी संसदीय यात्रा और वहा□के कार्यों के बारे में पूछे गए एक प्रश्न का उत्तर देते हुए ताई श्रीमती महाजन ने कहा कि अ□ने निर्वाचन क्षेत्र में अच्छा स□र्क, आर्थिक विकास और समावेशी विकास सुनिश्चित करना उनकी वरीयता रही है। इस सम्बन्ध में उन्होंने रेल, वायुयान और सड़क स□र्क सहित इंदौर के विभिन्न क्षेत्रों का विकास सुनिश्चित करने के लिए विगत वर्षों में शुरू की गई कई योजनाओ□का उल्लेख किया। उन्होंने इंदौर के ग्रामीण क्षेत्रों में चौतरफा विकास के लिए किए गए प्रयासों का विशे□ रू□ से उल्लेख किया।

इस महत्वपूर्ण आयोजन में लोक सभा अध्यक्ष श्रीमती महाजन ने कहा कि संसद का मुख्य कार्य लोगों से जुड़े व्या□क मुद्दों □र चर्चा करना, वाद-विवाद करना और निर्णय लेना है। सभा में सार्थक वाद-विवाद को सुनिश्चित करने के लिए सभा के सुचारु कार्य संचालन हेतु अनेक नियम बनाए गए हैं और इन नियमों का ईमानदारी से अनु□ालन करने के लिए सभी सदस्यों को नियमित रू□ से इनकी जानकारी दी जाती है, □रन्तु ऐसे भी अवसर आए है जब सभा में अशोभनीय दृश्य देखने को मिलते है जो कभी-कभी सभा की गरिमा को कम कर देते हैं और संसद सदस्यों की मूल ज़िम्मेदारी को बेअसर करने लगते हैं। उन्होंने आगाह किया कि लोग ऐसे अमर्यादित व्यवहार को बड़ी बारीकी से देखते हैं और वे संसदके दोनों सदनों में अ□ने प्रतिनिधियों द्वारा किए गए कार्यों के आधार □र चुनावों में अ□ना मतदान करते हैं। कई अवसरों □र सदन में हंगामा केवल सदस्यों के व्यवहार के कारण नही□होता। अ□ने दलों की भावनाओ□ को व्यक्त करने की ज़िम्मेदारी उनके नेताओ□की होती है। उन्होंने सभी के सहयोग की मांग की ताकि महत्वपूर्ण मुद्दों □र ज़िम्मेदारी से और शान्तिपूर्ण ढंग से सार्थक वाद-विवाद हो सके। इस सम्बन्ध में उन्होंने अ□नी □हल अध्यक्षीय शोध कदम (स्□ीकर्स रिसर्च इनिशिएटिव-SRI) का

उल्लेख किया, जिसकी संकल्पना विशेषज्ञों से बातचीत के माध्यम से सभा में उठाए जाने वाले मुद्दों को समझने और उन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए सदस्यों का लगातार सहयोग करने के लिए की गई है।

देश के विकास में महिलाओं का योगदान- यह टिप्पणी करते हुए कि महिला सांसदों के काम को विधानमंडलों में उनकी संख्या के आधार पर नहीं बल्कि कार्यवाही में उनके योगदान की गुणवत्ता के आधार पर आंका जाना चाहिए, श्रीमती महाजन ने ज़ोर देकर कहा कि हमें इस बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए कि महिलाएं समाज और देश के लिए किस तरह योगदान दे रही हैं। उन्होंने कहा कि जेंडर बजटिंग, महिला अनुकूल प्रौद्योगिकियों और खासकर महिलाओं के लिए नौकरियाँ सृजित करने हेतु नीतियों में बदलाव किया जाना चाहिए ताकि वे अपने घरों और कार्यस्थल के बीच तालमेल बिठा सकें।

श्रीमती महाजन ने कहा कि संसद में महिला आरक्षण की मांग जायज है, परंतु यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि महिला सांसद जनादेश को अच्छी तरह समझें और सभा की कार्यवाही में अच्छे और सार्थक ढंग से भाग लें। उन्होंने 5 और 6 मार्च 2016 को नई दिल्ली में 'महिला जनप्रतिनिधि : सशक्त भारत की निर्माता' संबंधी राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए की गई अपनी पहल का भी उल्लेख किया, जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ कहा गया था कि निर्वाचित प्रतिनिधि जो पहले से ही सशक्त हैं उन्हें अन्य लोगों, समाज को और पूरे राष्ट्र को सशक्त बनाना चाहिए।

मीडिया की अहम भूमिका- उन्होंने यह भी कहा कि संसद की कार्यवाही को जनता तक पहुंचाने में मीडिया की काफी अहम भूमिका रही है। तथापि, उन्होंने नोट किया कि हाल ही में मीडियाकर्मियों में यह प्रवृति देखी गई है कि वे सभा में होने वाले हंगामे को ज्यादा उजागर करते हैं और अच्छे भाषणों तथा विचारों को नजरअंदाज करते हैं। इस बात के मद्देनजर कि वर्ष 2001 के बाद से मीडिया संसद की कार्यवाही की काफी कम कवरेज कर रही है, उन्होंने कहा कि यह एक गंभीर मामला है और मीडिया को इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने मीडिया से आग्रह किया कि वह विवेकपूर्ण ढंग से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करे ताकि लोगों के सरोकारों और आकांक्षाओं को संसदीय कार्य से जोड़ा जा सके।

भारत के 23 राज्यों और 85 कैंपस के 160 से अधिक प्रतिनिधि इस कार्यक्रम में भाग लेने आए हैं।